eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार

समीक्षा सिंह[1] एवं डॉ0 अभिलाष सिंह यादव[2]
[1]शोध छात्रा, महामाया राजकीय महाविद्यालय, धनूपुर, हण्डिया, प्रयागराज
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, महामाया राजकीय महाविद्यालय, धनूपुर, हण्डिया, प्रयागराज सम्बद्धः प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्याल, प्रयागराज

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार किसी भी राष्ट्र की प्रगति, प्रतिस्पर्धात्मकता और सतत् विकास के मूल आधार बन चुके हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वह उच्च शिक्षा प्रणाली को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, और नवाचार–उन्मुख बनाए। इस शोधपत्र में उच्च शिक्षा के बदलते परिप्रेक्ष्य, अनुसंधान की भूमिका, तथा नवाचार की उपयोगिता पर समग्र दृष्टि डाली गई है। साथ ही, यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020), स्टार्टअप इंडिया, आत्मनिर्भर भारत अभियान और डिजिटल इंडिया जैसे प्रयास शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

शोध में यह भी विश्लेषण किया गया है कि विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों को किस प्रकार बहु–विषयक और नवाचारी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है ताकि वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बन सकें। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षा और नवाचार को एकीकृत दृष्टिकोण से समझना और नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्द :– उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, बहु–विषयक दृष्टिकोण, नीति निर्माण, शैक्षिक सुधार, सतत विकास

Introduction

आज भारत देश विश्वभर के उन सभी चुनिन्दा देशों में शामिल है जो विशाल शैक्षणिक संरचना के साथ तीव्र तकनीकी प्रगति और युवा जनसंख्या के साथ वैश्विक स्तर पर नेतृत्व करते हुए आगे बढ़ रहा है। ऐसे स्वरूप में 'उच्च शिक्षा अनुसंधान एवं नवाचार'' न केवल विकास के तीन स्तम्भ बल्कि एक दूसरे के पूरक भी बन जाते हैं। वर्तमान में समाज का जो रूप दिखाई दे रहा है वह कुछ दिन के परिश्रम का फल नहीं है। अपितु युगों–युगों की कठिन तपश्या का परिणाम है। मानव सभ्यता का आधुनिक रूप जो हमें दिखाई दे रहा है जिसमें शिक्षा का स्तर अपनी चरम परिणति पर पहुंच गया है और शिक्षा सिर्फ पुरुष तक ही नहीं बल्कि महिलाओं के लिए भी उतना ही महत्व रखता है। शिक्षा का अर्थ सिर्फ साक्षर होना नहीं है अपितु उच्च शिक्षा प्राप्त करना, शोध अनुसंधानों में अपनी प्रतिभा का प्रयोग करना व समाज को एक नई दशा एवं दिशा देने में योगदान देना है। शिक्षा का महत्व इतना बढ़ गया है कि हर क्षेत्र में एक नई खोज एवं एक नई शुरुआत दिखाई देती है। कुछ सदियों पूर्व भारत में शिक्षा का महत्व बहुत पिछड़ गया था। हालांकि वेदों और पुराणों में भारत में शिक्षा हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है और स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान शिक्षा का अधिकार था। जैसा कि भारत पर विदेशियों के आक्रमण के उपरान्त भारत के लोगों को गुलाम बनाना शुरू किया और महिलाओं के साथ अत्याचार बढ़ता गया। ऐसी स्थिति में शिक्षा कुचल

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

दी गयी क्योंकि भारत के लोगों को अपना अस्तित्व बचाना ही मुश्किल हो गया था। एक लम्बी लड़ाई लड़ने के बाद अन्ततः वह समय आ ही गया जब भारत आजाद हुआ और आजादी के 75 वर्षों के बाद भारत में शिक्षा का स्तर तेजी से बढ़ा है। सिर्फ साक्षरता के स्तर में ही बढ़ोत्तरी नहीं हुई अपुति उच्च शिक्षा में भी विकास हुआ है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्रांति, डिजिटल युग की माँग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा को एक नई दिशा देने की पहल की है। जिसके कारण आज नवाचार आधारित शिक्षण विधियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

उद्देश्य– इस शोध आलेख का प्रमुख उद्देश्य उपलब्ध उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसंधान व नवाचार की स्थिति का आकलन करना व उनके सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं का अध्ययन करना व विश्लेषण के उपरान्त इस आलेख में उस रिक्ति की पूर्ति करने का प्रयास करना जिससे भावी शोध आलेख व अनुसंधान कर्ता को लाभ मिल सके। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य भारत में इन तीनों घटकों (उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार) की स्थिति का मूल्यांकन उनके बीच के आपसी सम्बन्धों, क्रिया संक्रियाओं को समझना तथा भविष्य की दिशा में नीतिपरक सुझाव प्रस्तुत करना है। अनुसंधान की गुणवत्ता, उसकी चुनौतियों एवं संभावनाओं की विवेचना करना भी इस शोध पत्र का एक प्रमुख उद्देश्य है। इस शोध पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। साथ ही साथ वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। डेटा एकत्रित करने हेतु प्राथमिक स्त्रोत में (इंटरव्यू, केस स्टडी) तथा द्वितीयक स्त्रोत में (नीति दस्तावेज, सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्रों आदि) का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण हेतु तुलनात्मक, प्रवृति विश्लेषण एवं विषयवस्तु विश्लेषण तकनीक का उपयोग किया गया है।

वर्तमान में वैश्विक दृष्टिकोण से देखें तो उच्च शिक्षा मात्र ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है बल्कि यह नवाचार एवं अनुसंधान का केन्द्र बन गया है तथा यह समाज को उत्प्रेरित कर नई दिशा देने वाला बन गया है। वर्तमान समय में जब ज्ञान एवं शिक्षा को ही सबसे मूल्यवान पूंजी माना जा रहा है तब भारत जैसे युवा राष्ट्र के लिए उच्च शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार केवल नीतिपरक विषयवस्तु नहीं है, बल्कि राष्ट्र के भविष्य की नींव है। वर्तमान परमाणु युग लाने में कई दशक लगे तब कहीं जाकर यह विश्व देखने को मिला है जहां शिक्षा ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। अनेक विद्वान, वैज्ञानिक, शोधकर्ता जो उस उच्च स्थिति को दिलाने में स्वयं के अथक प्रयास में कोई भी कमी नहीं छोड़ी है। वर्तमान भारत जिसमें इसरो, नासा, डी0आर0डी0ओ0, तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों ने अपने प्रयोगों द्वारा भारत को विश्व की अग्रणी श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। भारत की उच्च शिक्षा व प्रतिभा का लाभ सिर्फ भारत को ही नहीं बल्कि पूरा विश्व लाभांवित हो रहा है व उसकी प्रतिभा विश्व के हर क्षेत्र में देखने को मिल जायेगी। भारत की वर्तमान सरकार उच्च शिक्षा पर दिलचस्पी से कार्य कर रही है व शोधार्थियों को अपने शोध विषय के लिए प्रेरित कर रही है कि वे ऐसे शोध विषय पर कार्य करें जिसका लाभ वर्तमान एवं भविष्य दोनों को हो।

उन्नत शिक्षा संस्थान अब केवल ज्ञान प्राप्ति का केन्द्र नहीं बल्कि विचारोंन्मुखता एवं नये विचारों के पोषक बन चुके हैं।

NEP (2020) (New Education Policy) 2020 ने इन्हीं विचारों को केन्द्र में रखते हुए शिक्षा को बहु विषयी, लचीली एवं शोधपरक बनाने की पहल की है।[1]

शोध की आवश्यकता और प्रासंगिकता :– 21वीं सदी एक ज्ञान–परक अर्थव्यवस्था की सदी है। यदि भारत देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनना है तो उसे उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली, वैश्विक मानकों पर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

आधारित अनुसंधान और नवप्रवर्तक सोच को विकसित करना होगा। वर्तमान भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार तेजी से हो रहा है, जिससे विद्यार्थियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। किन्तु इस विकास के समानांतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मौलिक शोध और नवाचार की संस्कृति का विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पाया है। विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में नवाचार को बढ़ावा देने वाली दृष्टि और वातावरण अभी भी सीमित शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ताकि भारत वैश्विक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में प्रभावी भूमिका निभा सके। इस परिप्रेक्ष्य में नवाचार को केन्द्रिय स्थान देना अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। इसकी प्रासंगिकता निम्न बिन्दुओं पर निर्भर करती है–

1. समस्या की पहचान– वर्तमान में शोध समस्याओं को पहचानने तथा उसका समाधान खोजने में मदद करता है जिससे जीवन स्तर सुचारू रूप से बना रहे।

2. चुनौतियाों की दृष्टि से– शोध के द्वारा भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करें तथा क्या तरीका होना चाहिए हल निकालने में शोध से मदद मिलती है। जैसे– ऊर्जा संकट, जलवायु परिवर्तन आदि।

3. ज्ञान के विकास की दृष्टि से– शोध नए तकनीकी विचारों एवं तरीकों को जानने, समझने एवं उत्पादकता को कैसे विकसित करने में उसमें मदद करता है।

4. **व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक विकास–** शोध, व्यक्तियों के अन्दर की इच्छा जैसे जिज्ञासुपन तथा किसी विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने तथा कौशल विकास में मदद करता है। शैक्षणिक तौर पर देखें तो छात्रों एवं शोधकर्ताओं में गहन अध्ययन की जिज्ञासा पैदा करती है। शोध सामाजिक परिवर्तन में एक अहम भूमिका निभाता है जिससे देश एवं समाज का चौमुखी विकास सुनिश्चित होता है। जैसे–समानता, सामाजिक न्याय एवं मानव अधिकारों को बढ़ावा मिलता है।

अनुसंधान का स्वरूप और चुनौतियाँ– भारत में अनुसंधान का स्वरूप कई वर्षों में विस्तृत अवश्य हुआ, परन्तु गुणवत्ता तथा औद्योगिक उपयोगिता के स्तर में अभी अनेक सुधार की अपेक्षा है। शोध के लिए उपलब्ध बजट सीमित है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान कार्यों को पर्याप्त संसाधन नहीं मिल पाते हैं। अधिकांश विश्वविद्यालयों में शोध केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम बन गया है, जिससे नवाचार और सामाजिक औद्योगिक योगदान की भावना क्षीण हो गई है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु (राष्ट्रीय अनुसंधान फाउण्डेशन) (NRF) की स्थापना एक महत्वपूर्ण पहल हो सकती है। यह फाउण्डेशन न केवल वित्तीय सहायता प्रदान करेगा, अपितु शोध की दिशा, उद्देश्य और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। यदि शोध को केवल शैक्षणिक अभ्यास न मानकर सामाजिक एवं औद्योगिक विकास का साधन माना जाए, तो भारत वैश्विक अनुसंधान परिदृश्य में एक सशक्त उपस्थिति दर्ज करा सकता है।

उच्च शिक्षा : गुणात्मक उन्नयन की ओर एक विस्तार – भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व की दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है, 2021–22, 2022–23 की रिपोर्ट के अनुसार देश में 1168 से अधिक 2022–23 विश्वविद्यालय और 45473 से अधिक कॉलेज हैं।[2] फिर भी मात्रात्मक उपलब्धि के बाद भी गुणवत्तापूर्ण रोजगार परक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से आज भी कई प्रश्न खड़े होते हैं।

प्रमुख समस्याएँ :– उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेक संरचनात्मक समस्याएँ विद्यमान है, जिनमें शिक्षा और कौशल के बीच स्पष्ट अंतर, शैक्षणिक अवसंरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) की असमानता, शोध की संस्कृति का

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

अभाव तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं शोध में सहभागिता की कमी प्रमुख हैं। इस समस्याओं के कारण न केवल उच्च शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है, बल्कि छात्रों की रोजगारपरक एवं नवाचार भी सीमित रह जाती है। इसके अलावा उच्च शिक्षा में राजनीतिकरण, सीमित फण्ड तथा उद्योंगों एवं संस्थानों के बीच आपसी सहयोग की कमी ने एक बहुत बड़ी चुनौती सामने ला दी है। इसका अभाव उच्च शिक्षा के शिखर को प्राप्त करने की एक बहुत बड़ी चुनौती है। इसके कुछ प्रमुख बिन्दु हैं–

1. **दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली–** भारतीय उच्च शिक्षा की परीक्षा प्रणाली में अनेकों दोष विद्यमान हैं। इसमें विश्वविद्यालयी परीक्षायें, विद्यार्थियों की योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं कर पाते। विश्वविद्यालय पूरे वर्ष में होने वाली मुख्य परीक्षा में सफलता के आधार पर जो निबन्ध के रूप में होती है विद्यार्थियों को कक्षा में सफलता प्राप्त करा देते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज की वार्षिक निबन्धात्मक परीक्षा शैली विद्यार्थियों की योग्यता की सही परख नहीं कर सकती है। यह एक दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है।
2. **शिक्षा का माध्यम–** भारत को आजाद हुए कई वर्ष पूरे हो चुके हैं पर आज भी उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा को ही मुख्य धारा के रूप में रखा गया। कुंजरू समिति ने यह प्रस्तावित किया था कि प्रचलित अंग्रेजी भाषा को परिवर्तित करना होगा तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी या अन्य कोई भारतीय भाषा रखनी होगी परन्तु अंग्रेजी के समर्थक आज भी अंग्रेजी को ही शिक्षा का माध्यम मानते हैं। वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय नवयुवकों को अंग्रेजी में विचार अभिव्यक्ति एक समस्या के रूप में दिखाई दे रही है। इस समस्या के कारण उच्च शिक्षा का प्रसार नहीं हो पा रहा है। भारत में उच्च शिक्षा की सफलता एवं सर्वमुखी विकास के लिए इस भाषाई समस्या का समाधान करना अति आवश्यक है।
3. **प्रतिभा का पलायन–** उच्च शिक्षा में एक बड़ी चुनौती प्रतिभा का पलायन भी है। जिसमें सुविधाओं के अभाव एवं खुले स्तर पर शोध न कर पाने के कारण प्रतिभावान विद्यार्थी, शोधार्थी अन्य देशों में पलायन कर जाते हैं जिससे भारत की प्रतिभा अन्य देशों में एक विशेष रूप में प्रकट होती है।
4. **बुनियादी ढांचे की कमी–** इसके अन्तर्गत बहुत सारे शिक्षण संस्थानों में बुनियादी ढांचे की कमी है जैसे– प्रयोगशालाओं का न होना, कक्षाओं का व्यवस्थित न होना, पुस्तकालयों की सुविधा का न होना, यह एक उच्च शिक्षा प्राप्त करने की बुनियादी आवश्यकतायें हैं इसके अभाव में वर्तमान में उच्च शिक्षा का स्वरूप विखण्डित नजर आ रहा है।

NEP 2020 प्रस्तावित Academic Bank of Credits Multiple Entry Exit और Institutional Autonomy जैसे प्रावधान इस स्थिति में सुधार के प्रयास हैं।[3]

उच्च शिक्षा–

अनुसंधान प्रगति की रीढ़ :–

उच्च शिक्षा किसी भी देश के विकास और आत्मनिर्भरता की सीढ़ी होती है। भारत की देखें तो भारत के कुल अनुसंधान व्यय उसे जी0डी0पी0 का केवल 0.7 प्रतिशत है, जबकि विकसित देशों में यह 2–4 प्रतिशत तक ही है।[4] उदाहरण– अमेरिका 3 प्रतिशत, चीन–2.4 प्रतिशत से ऊपर

भारत में CSIR, ICSSR, UGC, DST जैसी संस्थाएं सक्रिय होते हुए भी एक राष्ट्रीय शोध दृष्टिकोण (National Research Foundation) का अभाव लम्बे समय से महसूस हो रहा है।[5]

नवाचार : शिक्षा का क्रियात्मक पक्ष–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

'नवाचार' शब्द अंग्रेजी भाषा के Innovation (इन्नोवेशन) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिकस अर्थ नव निर्माण एवं नव प्रवर्तन है।

नवाचार को स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (Smart India Hackathan) (Startup India) तथा अटल नवाचार योजना/मिशन द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

विश्व नवाचार सूचकांक 2024 में भारत 39वें स्थान पर है जो संभावनाओं का संकेत होने के साथ–साथ चुनौतियों को भी दर्शाता है।[6]

शिक्षा में नवाचार को बाधित करने वाले कारक –

- प्रयोग से पूर्व ही असफलता एवं उचित प्रयोग के न होने का भय एवं डर।
- संसाधनों एवं उचित मार्गदर्शन का अभाव।
- इन कारकों को दूर करने के लिए विश्वविद्यालयों में इनक्यूबेशन सेंटर, इनोवेशन लैब और स्टार्टअप हब स्थापित किए जाएं।

मुख्य बिन्दु : समन्वय की आवश्यकता– उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार– ये तीनों विषय एक दूसरे के पुरक हैं।

उच्च शिक्षा		अनुसंधान		नवाचार
.....		.....		.....
ज्ञान का आधार		ज्ञान की खोज		ज्ञान का अनुप्रयोग

भविष्य को बेहतर बनाने के लिए उच्च शिक्षा पर कैसे ध्यान केन्द्रित करें– 21वीं सदी एक ऐसी सदी है जहां किसी भी राष्ट्र का विकास एवं उसकी प्रगति उसके ज्ञान–आधारित व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था, नवाचार क्षमता और मानव संसाधनों के स्तर पर निर्भर करती है। इसलिए उच्च शिक्षा केवल डिग्री ग्रहण करने का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में देश की भागीदारी का आधार बन चुकी है। उच्च शिक्षा न केवल छात्रों को रोजगार योग्य बनाती है बल्कि स्वतंत्रत चिंतक, नेतृत्वपरक व्यक्ति एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है और वे ही छात्र समाज को नई दिशा देने में पूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान में जब सभी देश चौथी औद्योगिक क्रांति, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा और मशीन लर्निंग जैसे परिवर्तनों से गुजर रहे हैं तब भारत देश की उच्च शिक्षा प्रणाली को नवाचार उद्यमिता और डिजिटल कौशल के विकास पर केन्द्रित होना होगा। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को केवल ज्ञान संचालित करने का केन्द्र न बनकर बल्कि अनुसंधान, विचार–विमर्श और समाधान निर्माण का केन्द्र बनना होगा। स्टार्टअप्स और सामाजिक उद्यम तथा इन्क्यूबेशन केन्द्रों के माध्मय से विद्यार्थी न केवल आत्मनिर्भर बनेंगे, बल्कि रोजगार सृजन में भी सहायक होंगे। उच्च शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण बात सामाजिक न्याय और समावेशन से जुड़ा है। यदि सभी वर्ग के लोगों को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध करा दिए जाएं तो समाज की विषमता को कम किया जा सकता है और एक सशक्त, समरसतापूर्ण समाज की स्थापना की जा सकती है। साथ ही साथ मूल्य आधारित शिक्षा, नैतिकता और संवेदनशीलता का समावेशन भी अति आवश्यक है जो छात्र को केवल योग्य ही नहीं बल्कि जिम्मेदार मनुष्य बनाते हैं।

निष्कर्ष– प्रस्तुत आलेख में उन तमाम शोध रिसर्च आंकड़ों, पत्रिकाओं के अध्ययन के उपरान्त यह निष्कर्ष

निकला कि उच्च शिक्षा का विकास हुआ है। लेकिन जैसा वर्तमान दृष्टि पर नजर डालने पर पता चलता है कि इस औद्योगिक तकनीकी व अंतरिक्ष युग में कहीं न कहीं भारत की उच्च शिक्षा अभी पीछे रह गयी है। उपर्युक्त आलेख में कई अपरिहार्य कारण बताये गये हैं, अगर इन कारणों का उचित निदान किया जाये तो सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे फिर भी यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत की प्रतिभा अन्य देशों के मुकाबले अच्छी स्थिति में है और किसी भी क्षेत्र में टक्कर देने में पीछे नहीं है। हाँ, यह कह सकते हैं कि संख्यात्मक कमी तो है परन्तु गुणात्मक नहीं।

21वीं सदी एक विकासशील सदी है जिसमें उच्च शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं बल्कि एक व्यक्ति,समाज, राष्ट्र के सामूहिक विकास का साधन बन चुका है। वर्तमान की वैश्विक चुनौती, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक आवश्कयता को ध्यान में रखते हुए हमारी शिक्षा प्रणाली में नवाचार, लचीलापन और समावेशिता को शामिल करना अनिवार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उच्च शिक्षा को नए दृष्टिकोण और व्यापक लक्ष्य प्रदान किए, जिससे उच्च शिक्षा केवल ज्ञान केन्द्रित न रहे बल्कि कौशल विकास, अनुसंधान और मूल्य आधारित शिक्षा बन सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (भारत सरकार)
2. AISHE Report 2022-23 Ministry of Education.
3. UGC Guidelines on Academic Reforms 2021.
4. UNESCO SCIENCE REPORT 2021-22
5. नीति आयोग की राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान (NRF 2020)
6. Global Innovation Index- 2024
7. Sharma R. (2020) Emerging trends in Indian Education.
8. Atal Innovation Mission, Niti Aayog.
9. Balasubramaniam P. (2014)- Indian Journal of Higher Education.
10. शर्मा, अरविन्द कुमार 2012 ई–सूचना : स्त्रोत एवं सेवाएं, एसएस प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. कश्यप, डीडी 2023 उच्च शिक्षा के विकास में शोध का महत्त्व ISBN NO.978-93-93403-10-0
12. https://www.ugc.giv.in
13. https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2011.11.211
14. https://www.sciencedirect.com
15. https://www.refseek.com